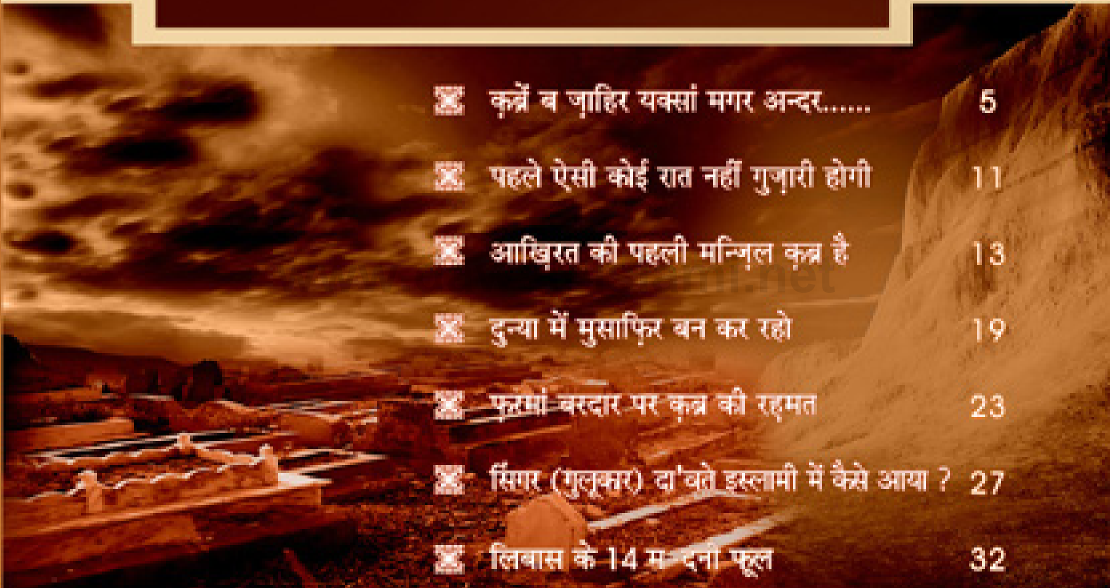
क़ब्र की पहली रात

QABR KI PAHLI RAAT(HINDI)



शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

مکتبۃ المدینہ
(دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले (اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 ह.

क़ब्र की पहली रात

येह रिसाला (**क़ब्र की पहली रात**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस बयान को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा-1,
अह़मद आबाद, गुजरात, MO : 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुसत़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

क़ब्र की पहली रात [1]

शैत़ान हरगिज़ नहीं चाहेगा कि येह रिसाला (36 स-फ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ कर क़ब्र की पहली रात की तय्यारी का आप का ज़ेह्न बने, शैत़ान का वार नाकाम बना दीजिये

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर **अस्सी** बार दुरूदे पाक पढ़े उस के **अस्सी साल** के गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे।

(اَلْجَامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص۳۲۰ حدیث ۵۱۹۱ دار الکتب العلمیة بیروت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीने ह़सन रह जाएगा
कोई गुल बाक़ी रहेगा न चमन रह जाएगा

बुलबुलें उड़ जाएंगी सूना चमन रह जाएगा
हम सफ़ीरो बाग़ में है कोई दम का चह्चहा

अत़्लसो कम ख़्वाब की पूशाक पर नाज़ां न हो
इस तने बे जान पर ख़ाकी कफ़न रह जाएगा

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सह़राए मदीना बाबुल मदीना कराची) में 27 रबीउ़न्नूर 1431 हि. (14-3-2010) इतवार के रोज़ फ़रमाया जो ज़रूरतन तरमीम के साथ तह़्रीर किया गया। मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अपने घर के दरवाज़े पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि वहां से एक जनाज़ा गुज़रा, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी उठे और जनाज़े के पीछे चल दिये। जनाज़े के नीचे एक **म-दनी मुन्नी** ज़ारो क़ित़ार रोती हुई दौड़ी चली जा रही थी, वोह कह रही थी **: ऐ बाबाजान !** आज मुझ पर वोह वक़्त आया है कि पहले कभी न आया था। ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन** बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने जब येह दर्द भरी आवाज़ सुनी तो आंखें अश्कबार, दिल बे क़रार हो गया, दस्ते शफ़्क़त उस ग़मगीन व यतीम बच्ची के सर पर फैरा और फ़रमाया : बेटी ! तुम पर नहीं बल्कि तुम्हारे **मर्हूम बाबाजान** पर वोह वक़्त आया है कि आज से पहले कभी न आया था। दूसरे दिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसी म-दनी मुन्नी को देखा कि आंसू बहाती क़ब्रिस्तान की त़रफ़ जा रही है। ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन** बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی भी ह़ुसूले इ़ब्रत के लिये उस के पीछे पीछे चल दिये। क़ब्रिस्तान पहुंच कर म-दनी मुन्नी अपने वालिदे मर्हूम की क़ब्र से लिपट गई। ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन** बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی एक झाड़ी के पीछे छुप गए। म-दनी मुन्नी अपने रुख़्सार मिट्टी पर रख कर रो रो कर कहने लगी **: ऐ बाबाजान !** आप ने अंधेरे में चराग़ और ग़म ख़्वार के बिग़ैर **क़ब्र की पहली रात** कैसे गुज़ारी ? **ऐ बाबाजान !** कल रात तो मैं ने घर में आप के लिये **चराग़** जलाया था, आज रात **क़ब्र** में चराग़ किस ने रोशन किया होगा ! **ऐ बाबाजान !** कल रात घर के अन्दर मैं ने आप के लिये बिछोना बिछाया था आज रात **क़ब्र** में बिछोना किस ने **बिछाया** होगा ! **ऐ बाबाजान !** कल रात घर के अन्दर मैं ने आप

के **हाथ पाउं** दबाए थे आज रात **क़ब्र** में हाथ पाउं किस ने दबाए होंगे ! **ऐ बाबाजान !** कल रात घर के अन्दर मैं ने आप को **पानी** पिलाया था आज रात **क़ब्र** में जब प्यास लगी होगी और आप ने पानी मांगा होगा तो पानी कौन लाया होगा ! **ऐ बाबाजान !** कल रात तो आप के **जिस्म** पर चादर मैं ने उढ़ाई थी आज रात किस ने उढ़ाई होगी ? **ऐ बाबाजान !** कल रात तो घर के अन्दर आप के चेहरे से **पसीना** मैं पूंछती रही हूं आज रात क़ब्र में किस ने पसीना साफ़ किया होगा ! **ऐ बाबाजान !** कल रात तक तो आप जब भी मुझे **पुकारते** थे मैं आ जाती थी आज रात क़ब्र में आप ने किसे पुकारा होगा और पुकार सुन कर कौन आया होगा ! **ऐ बाबाजान !** कल रात जब आप को भूक लगी थी तो मैं ने खाना पेश किया था, आज रात जब क़ब्र में भूक लगी होगी तो खाना किस ने दिया होगा ! **ऐ बाबाजान !** कल रात तक तो मैं आप के लिये त़रह़ त़रह़ के **खाने** पकाती रही हूं आज **क़ब्र की पहली रात** किस ने पकाया होगा !

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ग़म की मारी और दुखियारी म–दनी मुन्नी की येह दर्द भरी बातें सुन कर रो पड़े और क़रीब आ कर फ़रमाया : ऐ बेटी ! इस त़रह़ नहीं बल्कि यूं कहो : **ऐ बाबाजान !** दफ़्न करते वक़्त आप का चेहरा **क़िब्ला रुख़** किया गया था, आया आप भी उसी ह़ालत पर हैं या चेहरा दूसरी त़रफ़ फैर दिया गया है ? **ऐ बाबाजान !** आप को साफ़ सुथरा कफ़न पहना कर दफ़्नाया गया था क्या अब भी वोह साफ़ सुथरा ही है ? **ऐ बाबाजान !** आप को **क़ब्र** में सह़ीह़ व सालिम बदन के साथ रखा गया था, आया अब भी जिस्म सलामत है या उसे **कीड़ों** ने खा लिया

है ? **ऐ बाबाजान ! उ़-लमा** फ़रमाते हैं कि **क़ब्र की पहली रात** बन्दे से ईमान के बारे में सुवाल किया जाएगा तो कोई जवाब देगा और कोई मायूस रहेगा तो आप ने इस सुवाल का दुरुस्त जवाब दे दिया है या नाकाम रहे हैं ? **ऐ बाबाजान ! उ़-लमा** फ़रमाते हैं कि बा'ज़ मुर्दों पर **क़ब्र** कुशा-दगी करती है और बा'ज़ पर तंगी तो आप पर **क़ब्र** ने तंगी की है या कुशा-दगी ? **ऐ बाबाजान ! उ़-लमा** फ़रमाते हैं कि किसी मय्यित के कफ़न को जन्नती कफ़न से और किसी के कफ़न को जहन्नम की आग के कफ़न से बदल दिया जाता है तो आप का कफ़न आग से बदला गया या जन्नती कफ़न से ? **ऐ बाबाजान ! उ़-लमा** फ़रमाते हैं कि **क़ब्र** किसी को इस त़रह़ दबाती है जिस त़रह़ मां अपने बिछड़े हुए लाल को फ़र्ते शफ़्क़त से सीने के साथ चिमटा लेती है और किसी को ग़ज़ब नाक हो कर इस क़दर ज़ोर से भींचती है कि उस की पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं तो **क़ब्र** ने आप को मां की त़रह़ नरमी से दबाया, या पस्लियां तोड़ फोड़ डाली हैं ? **ऐ बाबाजान ! उ़-लमा** फ़रमाते हैं कि मुर्दे को जब **क़ब्र** में उतारा जाता है तो वोह दोनों सूरतों में पछताता है, अगर वोह नेक बन्दा है तो इस बात पर पछताता है कि उस ने नेकियां **ज़ियादा** क्यूं न कीं और अगर गुनहगार है तो इस पर कि गुनाह क्यूं किये ! तो **ऐ बाबाजान !** आप नेकियों की कमी पर पछताए या गुनाहों पर ? **ऐ बाबाजान !** कल जब मैं आप को पुकारती थी तो मुझे जवाब देते थे, आज मैं कितनी बद नसीब हूं कि **क़ब्र** के सिरहाने खड़ी हो कर पुकार रही हूं मगर मुझे आप के जवाब की आवाज़ सुनाई नहीं देती !

ऐ बाबाजान ! आप तो मुझ से ऐसे जुदा हुए कि क़ियामत तक दोबारा नहीं मिल सकते। ऐ ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ ! क़ियामत के मैदान में मुझे अपने बाबाजान की मुलाक़ात से मह़रूम न करना।

ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन** बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की येह बातें सुन कर वोह म-दनी मुन्नी अ़र्ज़ गुज़ार हुई : ऐ मेरे सरदार ! आप के नसीह़त आमोज़ कलिमात ने मुझे ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार कर दिया है। इस के बा'द वोह रोती हुई ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन** बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के साथ वापस लौट आई।

(المواعظ العصفورية لابی بکر بن محمد العصفوری، مترجم ص۱۱۸ بتصرف مکتبۂ اعلیٰ حضرت)

आंखें रो रो के सुजाने वाले जाने वाले नहीं आने वाले
कोई दिन में येह सरा ऊजड़ है अरे ओ छाउनी छाने वाले
नफ़्स ! मैं ख़ाक हुवा तू न मिटा है ! मेरी जान के खाने वाले
साथ ले लो मुझे मैं मुजरिम हूं राह में पड़ते हैं थाने वाले
हो गया धक से कलेजा मेरा
हाए रुख़्सत की सुनाने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ब्रें ब ज़ाहिर यक्सां मगर अन्दर......

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कभी न कभी तो क़ब्रिस्तान में जाने का आप सभी को इत्तिफ़ाक़ हुवा होगा। क्या कभी ग़ौर किया कि

क़ब्रिस्तान की सोग–वार फ़ज़ाएं, ग़मनाक हवाएं ज़बाने ह़ाल से ए'लान कर रही हैं : ऐ दुन्यवी ज़िन्दगी पर मुत़्मइन रहने वालो ! तुम सभी को एक न एक दिन यहां वीराने में क़ब्र के गहरे गढ़े के अन्दर आ पड़ना है। याद रखिये ! येह क़ब्रें जो ऊपर से एक जैसी दिखाई देती हैं ज़रूरी नहीं कि इन की अन्दरूनी ह़ालतें भी यक्सां हों, जी हां इस मिट्टी के ढेर तले दफ़्न होने वाला अगर कोई **नमाज़ी** था, र–मज़ानुल मुबारक के रोज़े रखने वाला था, सारा माहे मुबारक या कम अज़ कम आख़िरी अ़–श–रए मुबा–रका का **ए'तिकाफ़** करने वाला था, **माहे र–मज़ान** का आ़शिक़ व क़द्रदान था, फ़र्ज़ होने की सूरत में अपनी **ज़कात** पूरी अदा करने वाला था, रिज़्के़ ह़लाल कमाने वाला था, ब क़दरे किफ़ायत ह़लाल रोज़ी पर क़नाअ़त करने वाला था, तिलावते **क़ुरआन** करने वाला था, तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त और अव्वाबीन के नवाफ़िल अदा करने वाला था, **आ़जिज़ी** करने वाला था, ह़ुस्ने अख़्लाक़ का पैकर था, शरीअ़त के मुत़ाबिक़ एक मुठ्ठी तक **दाढ़ी** बढ़ाने वाला था, **इमामे** का ताज सर पर सजाने वाला था, **सुन्नतों** का मतवाला था, मां बाप की फ़रमां बरदारी करने वाला था, बन्दों के ह़ुक़ूक़ अदा करने वाला था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे **मह़बूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चाहने वाला था, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان व अहले बैते उ़ज़ाम और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का **दीवाना** था, तो उस की **क़ब्र** जो ऊपर से मिट्टी की छोटी सी ढेरी नुमा दिखाई दे रही है, हो सकता है कि **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से उस का अन्दरूनी ह़िस्सा ता ह़द्दे निगाह वसीअ़ हो चुका हो, **क़ब्र** में जन्नत की खिड़की

खुली हुई हो और इस मिट्टी के ज़ाहिरी ढेर तले **जन्नत** का ह़सीन बाग़ मौजूद हो । दूसरी त़रफ़ इसी मिट्टी के ढेर तले दफ़्न होने वाला अगर **बे नमाज़ी** था, र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े जान बूझ कर बरबाद करने वाला था, र-मज़ानुल मुबारक की रातों में गलियों के अन्दर क्रिकेट वग़ैरा खेलों के ज़रीए मुसल्मानों की इ़बादतों या नींदों में ख़लल डालने वाला या इस त़रह़ के खेल खेलने वालों का तमाशाई बन कर उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करने वाला था, फ़र्ज़ होने के बा वुजूद **ज़कात** की अदाएगी में बुख़्ल करने वाला था, **ह़राम रोज़ी** कमाने वाला था, **सूद व रिश्वत** का लैन दैन करने वाला था, लोगों के **क़र्ज़े** दबा लेने वाला था, **शराब** पीने वाला था, **जूआ** खेलने वाला था, शराब व जूए के अड्डे चलाने वाला था, मुसल्मानों की बिला इजाज़ते शर-ई़ **दिल आज़ारियां** करने वाला था, मुसल्मानों को डरा धमका कर भत्ता वुसूल करने वाला था, तावान की ख़ात़िर मुसल्मानों को **इग़्वा** करने वाला था, **चोरी** करने वाला था, **डाका** डालने वाला था, अमानत में **ख़ियानत** करने वाला था, ज़मीनों पर ना जाइज़ क़ब्ज़े करने वाला था, बेबस किसानों का ख़ून चूसने वाला था, इक़्तिदार के नशे में बद मस्त हो कर ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाने वाला था, दाढ़ी मुंडवाने या एक मुट्ठी से घटाने वाला था, फ़िल्में डिरामे देखने दिखाने वाला था, गाने बाजे सुनने सुनाने वाला था, गाली गलोच, झूट, **ग़ीबत**, चुग़ली, तोहमत व बद गुमानी और **तकब्बुर** का आ़दी था, मां बाप का ना फ़रमान था, तो हो सकता है कि मिट्टी के इस पुर सुकून नज़र आने वाले ढेर तले बे क़रारी का आ़लम हो, जहन्नम की

खिड़की खुली हुई हो, आग सुलग रही हो, सांप और **बिच्छू** दफ़्न होने वाले के बदन पर लिपटे हुए हों और ऐसी चीख़ो पुकार मची हुई हो जिसे हम सुन नहीं सकते। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

हाए ग़ाफ़िल वोह क्या जगह है जहां — पांच जाते हैं चार फिरते हैं

बाएं रस्ते न जा मुसाफ़िर सुन — माल है राहमार[1] फिरते हैं

जाग सुनसान बन है रात आई — गुर्ग[2] बहरे शिकार फिरते हैं

नफ़्स येह कोई चाल है ज़ालिम

जैसे ख़ासे बिजार फिरते हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक दिन मरना है आख़िर मौत है

ऐ आशिक़ाने रसूल ! इन क़ब्रिस्तानों की वीरानियों को देखिये और ग़ौर कीजिये कि क्या जीते जी हम में से कोई किसी **क़ब्रिस्तान** में एक रात ही तन्हा गुज़ार सकता है ? शायद कोई भी हिम्मत न कर पाए, तो जब जीते जी तन्हा रहने से घबराते हैं तो मरने के बा'द जब कि तमाम दोस्त व अह़बाब और सारे अ़ज़ीज़ो अक़ारिब छूट चुके होंगे, अ़क़्ल सलामत होगी, सब कुछ देख और सुन रहे होंगे मगर हिलने जुलने और बोलने से भी क़ासिर होंगे ऐसे होशरुबा ह़ालात में अंधेरी **क़ब्र** के अन्दर तन्हा क्यूंकर रह पाएंगे ! आह ! अपना ह़ाल तो येह है कि अगर आसाइशों से भरपूर ख़ूब सूरत एर कन्डीशन्ड कोठी में भी तन्हा क़ैद कर दिया जाए तो घबरा जाएं !

1 : लुटेरे 2 : भेड़िया

अंधेरी रात है ग़म की घटा इस्यां की काली है दिले बेकस का इस आफ़त में आक़ा तू ही वाली है

उतरते चांद ढलती चांदनी जो हो सके कर ले अंधेरा पाख[1] आता है येह दो दिन की उजाली है

अंधेरा घर, अकेली जान, दम घुटता, दिल उक्ताता ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को याद कर प्यारे वोह साअ़त आने वाली है

न चौंका दिन है ढलने पर तेरी मन्ज़िल हुई खोटी अरे ओ जाने वाले नींद येह कब की निकाली है

रज़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मन्ज़िल तो जैसी है वोह इक मैं क्या सभी को है

तुम इस को रोते हो येह तो कहो यां हाथ ख़ाली है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीन मानिये ! **क़ब्रिस्तान** में दफ़्न होने वाले आज हमें ज़बाने ह़ाल से नसीह़त कर रहे हैं **: "ऐ ग़ाफ़िल इन्सानो !** याद रखो ! कल हम भी वहीं (या'नी दुन्या में) थे जहां आज तुम हो और कल तुम भी यहीं (या'नी क़ब्र में) आ पहुंचोगे जहां आज हम हैं।" यक़ीनन जो दुन्या में पैदा हुवा उसे मरना ही पड़ेगा, जिस ने ज़िन्दगी के फूल चुने उसे मौत के कांटे ने ज़रूर ज़ख़्मी किया, जिस ने ख़ुशियों का गन्ज (या'नी ख़ज़ाना) पाया उसे मौत का रन्ज मिल कर रहा !

हम दुन्या में तरतीब वार आए हैं लेकिन......

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम इस दुन्या में एक तरतीब से आए ज़रूर हैं या'नी यूं कि पहले दादा फिर बाप फिर बेटा फिर पोता लेकिन मरने की तरतीब ज़रूरी नहीं, बूढ़ा दादा

1 : अंधेरा पाख या'नी महीने के आख़िरी पन्दरह दिन

ज़िन्दा होता है मगर शीर ख़्वार या'नी दूध पीता पोता मौत के घाट उतर जाता है, किसी के नानाजान ह़यात होते हैं मगर अम्मी जान दाग़े मुफ़ा-रक़त (या'नी जुदाई का सदमा) दे जाती हैं । हम में से किसी के घर से उस के भाई का जनाज़ा उठा होगा, किसी की मां ने निगाहों के सामने दम तोड़ा होगा, किसी के बाप ने मौत को गले लगाया होगा, किसी का जवान बेटा ह़ादिसे का शिकार हो कर मौत से हम कनार हुवा होगा, किसी की दादीजान मुल्के अ़दम या'नी क़ब्रिस्तान रवाना हुई होंगी तो किसी की नानीजान ने कूच की होगी । अपने फ़ौत हो जाने वाले इन अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा की त़रह़ एक दिन हम भी अचानक येह दुन्या छोड़ जाएंगे

दिला ग़ाफ़िल न हो यक दम येह दुन्या छोड़ जाना है
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अन्दर समाना है

तेरा नाज़ुक बदन भाई जो लैटे सैज फूलों पर
येह होगा एक दिन बे जां इसे कीड़ों ने खाना है

तू अपनी मौत को मत भूल कर सामान चलने का
ज़मीं की ख़ाक पर सोना है ईंटों का सिरहाना है

न बैली हो सके भाई न बेटा बाप ते माई
तू क्यूं फिरता है सौदाई अ़मल ने काम आना है

कहां है ज़ोरे नमरूदी ! कहां है तख़्ते फ़िरऔ़नी !
गए सब छोड़ येह फ़ानी अगर नादान दाना है

अ़ज़ीज़ा याद कर जिस दिन के इ़ज़्राईल आएंगे
न जावे कोई तेरे संग अकेला तू ने जाना है

जहां के शग़्ल में शाग़िल ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल
करे दा'वा कि येह दुन्या मेरा दाइम ठिकाना है

ग़ुलाम इक दम न कर ग़फ़्लत ह़याती पे न हो ग़ुर्रा
ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की याद कर हर दम कि जिस ने काम आना है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पहले ऐसी कोई रात नहीं गुज़ारी होगी

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضی اللہ تعالٰی عنہ इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या मैं तुम्हें उन दो दिनों और दो रातों के बारे में न बताऊं ! (1) एक दिन वोह है जब **अल्लाह** की त़रफ़ से आने वाला तेरे पास रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ का मुज़्दा (या'नी ख़ुश ख़बरी) ले कर आएगा या उस की नाराज़ी का पैग़ाम। और (2) दूसरा दिन वोह जब तू अपना **नामए आ'माल** लेने के लिये बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर होगा और वोह नामए आ'माल तेरे दाएं (या'नी सीधे) हाथ में दिया जाएगा या बाएं (या'नी उलटे) में। (और दो रातों में से) (1) एक रात वोह है जो मय्यित अपनी **क़ब्र** में गुज़ारेगी कि इस से पहले उस ने ऐसी रात कभी नहीं गुज़ारी होगी। और (2) दूसरी रात वोह है जिस की सुब्ह़ को **क़ियामत** का दिन होगा और फिर इस के बा'द कोई रात नहीं आएगी। (شُعَبُ الْاِیمان ج۷ص۳۸۸حدیث۱۰۶۹۷دارالکتب العلمیة بیروت)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वसिय्यत

ऐ आज के ज़िन्दो और कल के मुर्दो, ऐ फ़ना हो जाने वालो, ऐ कमज़ोरो, ऐ ना तुवानो, ऐ ज़ईफ़ो, ऐ बच्चो, ऐ जवानो, ऐ बूढ़ो ! यक़ीनन **क़ब्र की पहली रात** निहायत अहम रात है, **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, आ़शिक़े माहे नुबुव्वत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिय्ये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, पैकरे फ़ुनूनो ह़िक्मत, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त,**

बाइसे ख़ैरो ब-र-कत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने बहुत बड़े वलिय्युल्लाह और ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल होने के बा वुजूद येह **वसिय्यत** फ़रमाई कि : (बा'दे दफ़्न तल्क़ीन करने के बा'द) डेढ़ घन्टा मेरे **मुवा-जहा** (या'नी क़ब्र के चेहरे वाले ह़िस्से) में दुरूद शरीफ़ ऐसी आवाज़ से पढ़ते रहें कि मैं सुनूं । फिर मुझे **अर-ह़मुर्राह़िमीन** के सिपुर्द कर के चले आएं, और अगर तक्लीफ़ गवारा हो सके तो तीन शबाना रोज़ कामिल (या'नी मुकम्मल तीन दिन और तीन रातें) पहरे के साथ दो अ़ज़ीज़ या दोस्त मुवा-जहा में क़ुरआन शरीफ़ व दुरूद शरीफ़ ऐसी आवाज़ से बिला वक़्फ़ा पढ़ते रहें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो इस नए मकान में दिल लग जाए । (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सए सिवुम, स. 291, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

सगे मदीना की वसिय्यत

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अपने आक़ा आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربِّ العزت की पैरवी करते हुए सगे मदीना عُفِیَ عَنْہ ने भी इसी त़रह़ की **वसिय्यत** कर रखी है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 436 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल, "**रसाइले अ़त्तारिय्या**" में शामिल रिसाले "म-दनी वसिय्यत नामा" सफ़्ह़ा 394 पर है : "हो सके तो मेरे अहले मह़ब्बत मेरी तदफ़ीन के बा'द 12 रोज़ तक, येह न हो सके तो कम अज़ कम 12 घन्टे ही सही मेरी क़ब्र पर ह़ल्क़ा किये रहें और ज़िक्रो दुरूद और तिलावतो ना'त से मेरा दिल बहलाते रहें اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ नई जगह में दिल लग ही जाएगा, इस दौरान भी और हमेशा नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम रखें ।"

महबूबे बारी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अश्कबारी

हमारे बख़्शे बख़्शाए आक़ा, हमें बख़्शवाने वाले मीठे मीठे मक्की म-दनी मुस्तफ़ा, शाफ़ेए यौमे जज़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ब्र के तअ़ल्लुक़ से ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ मुला-हज़ा हो । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं, हम सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह एक **जनाज़े** में शरीक थे तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **क़ब्र** के कनारे पर बैठे और **इतना रोए कि मिट्टी भीग गई ।** फिर फ़रमाया : इस के लिये तय्यारी करो ।

(سُنَنِ اِبن ماجه ج ٤ ص ٤٦٦ حديث ٤١٩٥ دارالمعرفة بيروت)

सोया किये ना-बकार बन्दे
रोया किये ज़ार ज़ार आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आख़िरत की पहली मन्ज़िल क़ब्र है

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ जब किसी की **क़ब्र** पर तशरीफ़ लाते तो इस क़दर आंसू बहाते कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती । अ़र्ज़ की गई : जन्नत व दोज़ख़ का तज़्किरा करते वक़्त आप नहीं रोते मगर **क़ब्र** पर बहुत रोते हैं इस की वजह क्या है ? फ़रमाया : मैं ने नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है : **आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल क़ब्र है,** अगर **क़ब्र** वाले ने इस से नजात पाई तो बा'द का मुआ़-मला इस से आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़-मला ज़ियादा

सख़्त है। (सु-नने इब्ने माजह, जि. 4, स. 500, ह़दीस : 4267)

जनाज़ा ख़ामोश मुबल्लिग़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने जुन्नूरैन, जामिउ़ल कु़रआन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رضی اللہ تعالٰی عنہ का ख़ौफ़े ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ ! आप رضی اللہ تعالٰی عنہ **अ़-श-रए मुबश्शरह** या'नी उन दस ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने ह़क़्क़े तरजुमान से ख़ुसूसी त़ौर पर जन्नती होने की बिशारत दी थी, इन से मा'सूम फ़िरिश्ते **ह़या** करते थे। इस के बा वुजूद **क़ब्र** की होल नाकियों, वह़शतों, तन्हाइयों और अंधेरियों के बारे में बे इन्तिहा ख़ौफ़ज़दा रहा करते थे और एक हम हैं कि अपनी **क़ब्र** को यक्सर भूले हुए हैं, रोज़ बरोज़ लोगों के जनाज़े उठते देखने के बा वुजूद येह नहीं सोचते कि एक दिन हमारा जनाज़ा भी उठ ही जाएगा, यक़ीनन येह जनाज़े हमारे लिये **ख़ामोश मुबल्लिग़** की ह़ैसिय्यत रखते हैं। वोह जो कुछ ज़बाने ह़ाल से कह रहे होते हैं उस को किसी ने इस त़रह़ नज़्म किया है :

जनाज़ा आगे आगे कह रहा है ऐ जहां वालो
मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

अंधेरा काट खाता है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! कि हम दूसरों को **क़ब्र** में उतरता हुवा देखते हैं मगर येह भूल जाते हैं कि

एक दिन हमें भी **क़ब्र** में उतारा जाएगा। आह ! हमारी ह़ालत येह है कि रात बिजली फ़ेल हो जाए तो दिल घबराता ख़ुसूसन अकेले हों तो बहुत ख़ौफ़ आता और अंधेरा काट खाता है, हाए ! हाए ! इस के बा वुजूद **क़ब्र** के होलनाक घुप अंधेरे का कोई एह़सास नहीं। नमाज़ें हम से नहीं पढ़ी जातीं, र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े हम से नहीं रखे जाते, फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ज़कात पूरी हम से नहीं दी जाती, मां बाप के ह़ुक़ूक़ हम अदा नहीं कर पाते, आह ! रात दिन गुनाहों में गुज़र रहे हैं, यक़ीनन मौत का एक वक़्त मुक़र्रर है उसे टालना मुम्किन नहीं, अगर इसी त़रह़ गुनाह करते करते यकायक मौत का पैग़ाम आ पहुंचा और हमें क़ब्र के गढ़े में डाल दिया गया तो न जाने हमारी **क़ब्र की पहली रात** कैसी गुज़रे !

याद रख हर आन आख़िर मौत है बन तू मत अन्जान आख़िर मौत है
मरते जाते हैं हज़ारों आदमी आ़क़िलो नादान आख़िर मौत है
क्या ख़ुशी हो दिल को चन्दे ज़ीस्त से ग़मज़दा है जान आख़िर मौत है
मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शै को है सुन लगा कर कान आख़िर मौत है
बारहा इ़ल्मी तुझे समझा चुके
मान या मत मान आख़िर मौत है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ़लीशान कोठी का इ़ब्रत नाक वाक़िआ़

इन्सान बहुत लम्बे लम्बे मन्सूबे बनाता है मगर उस की इस

बात की त़रफ़ तवज्जोह ही नहीं होती कि लगाम किसी और के हाथ में है, जब यकायक लगाम खिंचेगी और मरना पड़ जाएगा तो सब किया कराया धरा का धरा रह जाएगा चुनान्चे कहा जाता है : "मदी-नतुल औलिया मुलतान" का एक नौ जवान धन कमाने की धुन में अपने वत़न, शहर, ख़ानदान वग़ैरा से दूर किसी दूसरे मुल्क में जा बसा। ख़ूब माल कमाता और घर वालों को भिजवाता, बाहम मश्वरे से **आ़लीशान** कोठी बनाने का त़ै पाया। येह नौ जवान सालहा साल तक रक़म भेजता रहा, घर वाले मकान बनवाते और उस को ख़ूब सजवाते रहे, यहां तक कि अ़ज़ीमुश्शान मकान तय्यार हो गया। येह नौ जवान जब वत़न वापस आया तो उस अ़ज़ीमुश्शान कोठी में रिहाइश के लिये तय्यारियां उरूज पर थीं मगर आह! मुक़द्दर कि उस आ़लीशान मकान में मुन्तक़िल होने से तक़रीबन एक हफ़्ता क़ब्ल ही उस नौ जवान का **इन्तिक़ाल** हो गया और वोह अपने रोशनियों से जग-मगाते आ़लीशान मकान के बजाए घुप अंधेरी **क़ब्र** में मुन्तक़िल हो गया।

जहां में हैं इब्रत के हर सू नुमूने **मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने**
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तूने **जो आबाद थे वोह मकां अब हैं सूने**
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

दुन्या के मतवाले

अफ़्सोस ! हमारी अक्सरिय्यत आज दुन्या की मतवाली और फ़िक्रे आख़िरत से ख़ाली है, हम में से कुछ तो वोह हैं जो फ़ानी दुन्या की लज़्ज़तों के बाइ़स मसरूर व शादां, ज़वाल व फ़ना से

बे ख़ौफ़, मौत के तसव्वुर से ना आशना, लज़्ज़ाते दुन्या में बद मस्त हैं तो बा'ज़ वोह हैं जो इस दारे ना पाएदार में यकायक मौत से हम कनार होने के अन्देशे से ना बलद, सहूलतों और आसाइशों के हुसूल में इस क़दर मगन हो गए कि क़ब्र के अंधेरों, वह्शतों और तन्हाइयों को भूल गए । आह ! आज हमारी सारी तुवानाइयां सिर्फ़ व सिर्फ़ दुन्यवी ज़िन्दगी ही बेहतर बनाने में सर्फ़ हो रही हैं, आख़िरत की बेहतरी के हुसूल की फ़िक्र बहुत कम दिखाई देती है । ज़रा ग़ौर तो कीजिये कि इस दुन्या में कैसे कैसे मालदार लोग गुज़रे हैं जो दौलत व हुकूमत, जाहो ह़श्मत, अहलो इ़याल की आ़रिज़ी उन्सिय्यत, दोस्तों की वक़्ती मुसा-ह़बत और ख़ुद्दाम की ख़ुशा-मदाना ख़िदमत के भरम में **क़ब्र** की तन्हाई को भूले हुए थे। मगर आह ! यकायक फ़ना का बादल गरजा, मौत की आंधी चली और दुन्या में ता देर रहने की उन की उम्मीदें ख़ाक में मिल कर रह गईं, उन के मसर्रतों और शादमानियों से हंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये । रोशनियों से जग-मगाते मह़ल्लात व क़ुसूर से उठा कर उन्हें घुप अंधेरी क़ुबूर में मुन्तक़िल कर दिया गया । आह ! वोह लोग कल तक अहलो इ़याल की रौनक़ों में शादमान व मसरूर थे और आज क़ुबूर की वह्शतों और तन्हाइयों में मग़मूम व रन्जूर हैं ।

अजल ने किस्रा ही छोड़ा न दारा इसी से सिकन्दर सा फ़ातेह़ भी हारा

हर इक ले के क्या क्या न ह़सरत सिधारा पड़ा रह गया सब यूंही ठाठ सारा

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

दुन्या का धोका

अफ़्सोस है उस पर, जो दुन्या की नैरंगियां देखने के बा वुजूद भी इस के धोके में मुब्तला रहे और मौत से यक्सर ग़ाफ़िल हो जाए। वाक़ेई जो दुन्यावी ज़िन्दगी के धोके में पड़ कर अपनी मौत और **क़ब्रो** ह़श्र को भूल जाए और **अल्लाह** तआ़ला को राज़ी करने के लिये अ़मल न करे, निहायत ही क़ाबिले मज़म्मत है। इस धोके से हमें ख़बरदार करते हुए हमारा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ पारह 22 सू-रतुल फ़ातिर की आयत नम्बर 5 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ وَقفة وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝۵

(پ۲۲،الفاطر:۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हुक्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी (या'नी शैतान)।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! और मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन जो मौत और इस के बा'द वाले मुआ़-मलात से सह़ीह़ मा'नों में आगाह है वोह दुन्या की रंगीनियों और इस की आसाइशों के धोके में नहीं पड़ सकता। क्या आप ने कभी किसी को मरने वाले की **क़ब्र** में रखने के लिये फ़र्नीचर तय्यार करवाते हुए, **क़ब्र में एर कन्डीशनर** लगवाते हुए, रक़म रखने के लिये तिजोरी बनवाते हुए, खेलों में जीते हुए कप और दुन्यवी काम्याबियों की अस्नाद सजाने के लिये अलमारी बनवाते हुए देखा है ? नहीं देखा होगा और येह काम शरअ़न दुरुस्त

भी नहीं हैं, तो जब सब कुछ यहीं छोड़ कर जाना है तो येह डिग्रियां हमारे किस काम की ? जिस दौलत के लिये सारी ज़िन्दगी मेह्नत व मशक़्क़त करते हैं वोह हमारी क्या मदद करेगी ? जिस मन्सब की बिना पर अकड़ फूं करते रहे वोह आख़िर हमारे क्या काम आएगा ? मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब भी वक़्त है, होश में आइये और क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी कर लीजिये।

दुन्या में मुसाफ़िर बन कर रहो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि **हुज़ूरे** पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा कन्धा पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : ‘‘दुन्या में यूं रहो गोया तुम मुसाफ़िर हो।’’ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाया करते : जब तू शाम करे तो आने वाली सुब्ह़ का इन्तिज़ार मत कर और जब सुब्ह़ करे तो शाम का मुन्तज़िर न रह और ह़ालते सिह़्ह़त में बीमारी के लिये और ज़िन्दगी में मौत के लिये तय्यारी कर ले। (صَحیح بُخاری ج ٤ ص ٢٢٣ حدیث ٦٤١٦ دارالکتب العلمیة بیروت)

दुन्या, आख़िरत की तय्यारी के लिये मख़्सूस है

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رضی الله تعالٰی عنه ने सब से आख़िरी ख़ुत़्बा जो इर्शाद फ़रमाया उस में येह भी है : **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें दुन्या सिर्फ़ इस लिये अ़त़ा फ़रमाई है कि तुम इस के ज़रीए आख़िरत की तय्यारी करो और इस लिये अ़त़ा नहीं फ़रमाई कि तुम इसी के हो कर रह जाओ, बेशक दुन्या फ़ानी और आख़िरत बाक़ी है। तुम्हें फ़ानी (दुन्या) कहीं बहका कर बाक़ी (आख़िरत) से

ग़ाफ़िल न कर दे, फ़ना हो जाने वाली दुन्या को बाक़ी रहने वाली आख़िरत पर तरजीह़ न दो क्यूं कि दुन्या मुन्क़तेअ़ होने वाली है और बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लौटना है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो क्यूं कि उस का डर उस के अ़ज़ाब के लिये (रोक और) ढाल और उस عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने का ज़रीआ़ है।

(ذَمُّ الدُّنیامع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیاج٥ ص٨٣رقم١٤٦المکتبة العصریة بیروت)

है येह दुन्या बे वफ़ा आख़िर फ़ना
न रहा इस में गदा न बादशह

ऐ आ़शिक़ाने रसूल और मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस दुन्या की ह़ैसिय्यत एक गुज़र गाह (या'नी रास्ते) की सी है जिसे त़ै करने के बा'द ही हम मन्ज़िल तक पहुंच सकते हैं, अब वोह मन्ज़िल जन्नत होगी या जहन्नम ! इस का इन्ह़िसार इस बात पर है कि हम ने येह सफ़र किस त़रह़ त़ै किया ! **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त गुज़ारी करते हुए या ना फ़रमान बन कर ? लिहाज़ा अगर हम जन्नत के इन्आ़मात लेना और जहन्नम के अ़ज़ाबात से बचना चाहते हैं तो हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी होगी।**"

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात

मय्यित का ए'लान

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर लोग उस का (या'नी मरने

वाले का) ठिकाना देख लें और उस का कलाम सुन लें तो मुर्दे को भूल जाएं और अपनी जानों पर रोएं। जब मुर्दे को तख़्त पर रख कर उठाया जाता है उस की रूह़ फड़फड़ा कर तख़्त पर बैठ कर निदा करती है : **ऐ मेरे अहलो इ़याल !** दुन्या तुम्हारे साथ इस त़रह़ न खेले जैसा कि इस ने मेरे साथ खेला, मैं ने ह़लाल और ग़ैरे ह़लाल माल जम्अ़ किया और फिर वोह माल दूसरों के लिये छोड़ आया। इस का नफ़्अ़ उन के लिये है और इस का नुक़्सान मेरे लिये, पस जो कुछ मुझ पर गुज़री है उस से डरो (या'नी इ़ब्रत ह़ासिल करो)।

(التّذکِرۃللقرطبی ص۷٦ دارالکتب العلمیة بیروت)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुर्दे की पुकार

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब जनाज़ा तय्यार हो जाता है और लोग उसे अपने कन्धों पर उठाते हैं, अगर वोह अच्छा है तो कहता है मुझे **जल्दी** ले चलो, अगर वोह बुरा होता है तो अपने रिश्तेदारों से कहता है : हाए ! मुझे तुम कहां लिये जा रहे हो ! इन्सान के इ़लावा हर एक चीज़ उस की आवाज़ सुनती है, अगर इन्सान उसे सुन ले तो **बेहोश** हो जाए। (सह़ीह़ बुख़ारी जि. 1, स. 465, ह़दीस : 1380)

क़ब्र की पुकार

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबुल ह़ज्जाज** सुमाली رضی اللہ تعالٰی عنہ से

रिवायत है, सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब मय्यित को **क़ब्र** में उतार दिया जाता है तो **क़ब्र** उस से ख़िताब करती है : ऐ आदमी तेरा नास हो ! तूने किस लिये मुझे **फ़रामोश** (या'नी भुला) कर रखा था ? क्या तुझे इतना भी पता न था कि मैं फ़ितनों का घर हूं, तारीकी का घर हूं, फिर तू किस बात पर मुझ पर अकड़ा अकड़ा फिरता था ? अगर वोह मुर्दा नेक बन्दे का हो तो एक **ग़ैबी आवाज़ क़ब्र** से कहती है : ऐ **क़ब्र !** अगर येह उन में से हो जो **नेकी** का हुक्म करते रहे और **बुराई** से मन्अ़ करते रहे तो फिर ! (तेरा सुलूक क्या होगा ?) **क़ब्र** कहती है : अगर येह बात हो तो मैं इस के लिये **गुलज़ार** बन जाती हूं। चुनान्चे फिर उस शख़्स का बदन **नूर** में तब्दील हो जाता है और उस की रूह़ रब्बुल आ़–लमीन عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की त़रफ़ **परवाज़** कर जाती है। **(مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج٦ ص٦٧ حدیث ٦٨٣٥ دارالکتب العلمیة بیروت)**

ऐ आ़शिक़ाने रसूल और मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सोचिये तो सही उस वक़्त जब कि **क़ब्र** में तन्हा रह गए होंगे, घबराहट त़ारी होगी, न कहीं जा सकते होंगे न किसी को बुला सकते होंगे और भाग निकलने की भी कोई सूरत न होगी। उस वक़्त **क़ब्र** की कलेजा फाड़ पुकार सुन कर क्या गुज़रेगी !

क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार — मुझ में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार
याद रख ! मैं हूं अंधेरी कोठड़ी — मुझ में सुन वह़शत तुझे होगी बड़ी
मेरे अन्दर तू अकेला आएगा — हां मगर आ'माल लेता आएगा
तेरा फ़न तेरा हुनर ओ़हदा तेरा — काम आएगा न सरमाया तेरा

दौलते दुन्या के पीछे तू न जा   आख़िरत में माल का है काम क्या

दिल से दुन्या की महब्बत दूर कर   दिल नबी के इ़श्क़ से मा'मूर कर

लन्दनो पेरिस के सपने छोड़ दे

बस मदीने ही से रिश्ता जोड़ ले

जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गढ़ा !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "क़ब्र या तो जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा ।" (سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص٢٠٨ حدیث٢٤٦٨ دارالفکربیروت)

गोरे नेकां बाग़ होगी ख़ुल्द का

मुजरिमों की क़ब्र दोज़ख़ का गढ़ा

फ़रमां बरदार पर क़ब्र की रह़मत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल करने वालों के लिये **क़ब्र** में राह़तें और बे नमाज़ियों, और गुनाहों भरे ग़ैर शर-ई फ़ेशन करने वालों के लिये आफ़तें ही आफ़तें होंगी, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन **सुयूत़ी शाफ़ेई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है, **क़ब्र** मुर्दे से कहती है कि अगर तू अपनी ज़िन्दगी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार था तो आज मैं तुझ पर रह़मत करूंगी और अगर तू अपनी ज़िन्दगी में **अल्लाह** तआ़ला का ना फ़रमान था तो मैं तेरे लिये अ़ज़ाब हूं, मैं वोह घर हूं कि जो मुझ में नेक और इत़ाअ़त गुज़ार हो कर दाख़िल हुवा वोह मुझ से ख़ुश हो कर निकलेगा और जो ना फ़रमान व गुनहगार था, वोह मुझ से तबाह ह़ाल हो कर निकलेगा ।

(شَرحُ الصُّدُور ص ١١٤، اھوال القبور لابن رجب ص٢٧ دار الغد الجدید، مصر)

पड़ोसी मुर्दों की पुकार

मन्क़ूल है : जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है और उसे अ़ज़ाब होता है तो **पड़ोसी मुर्दे** उस को पुकार कर कहते हैं : ऐ दुन्या से आने वाले ! क्या तूने हमारी मौत से नसीह़त ह़ासिल न की ? क्या तूने न देखा कि हमारे आ'माल कैसे ख़त्म हुए ? और तुझे तो अ़मल करने की मोहलत मिली थी, लेकिन तूने वक़्त ज़ाएअ़ कर दिया, **क़ब्र** का गोशा गोशा उस को पुकार कर कहता है : ऐ ज़मीन पर इतरा कर चलने वाले ! तूने मरने वालों से इ़ब्रत क्यूं ह़ासिल न की ? क्या तूने नहीं देखा था कि तेरे मुर्दा रिश्तेदारों को लोग उठा उठा कर किस त़रह़ क़ब्रों तक ले गए ।

(شَرۡحُ الصُّدُور ص ۱۱۶ مرکز اهلسنت برکات رضا الهند)

मुर्दों से गुफ़्त-गू

"**शर्हुस्सुदूर**" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : एक बार हम **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم के हमराह मदीनए मुनव्वरह के क़ब्रिस्तान गए । ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم ने क़ब्र वालों को सलाम किया और फ़रमाया : ऐ क़ब्र वालो ! तुम अपनी ख़बर बताओगे या हम तुम्हें बताएं ? सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि हम ने क़ब्र से "وَ عَلَيۡكَ السَّلَامُ وَرَحۡمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ" की आवाज़ सुनी और कोई कहने वाला कह रहा था : **या अमीरल मुअमिनीन !** आप ही ख़बर दीजिये कि हमारे मरने के बा'द क्या हुवा ? ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم ने फ़रमाया : सुन लो ! तुम्हारे माल तक़्सीम हो गए, तुम्हारी बीवियों ने दूसरे निकाह़ कर लिये, तुम्हारी औलाद

यतीमों में शामिल हो गई, जिस मकान को तुम ने बहुत मज़्बूत़ बनाया था उस में तुम्हारे दुश्मन आबाद हो गए। अब तुम अपना ह़ाल सुनाओ। येह सुन कर एक क़ब्र से आवाज़ आने लगी : **या अमीरल मुअमिनीन !** हमारे कफ़न फट कर तार तार हो गए, हमारे बाल झड़ कर मुन्तशिर हो गए, हमारी खालें टुकड़े टुकड़े हो गईं हमारी आंखें बह कर रुख़्सारों पर आ गईं और हमारे नथनों से पीप बह रही है और हम ने जो कुछ आगे भेजा (या'नी जैसे अ़मल किये) उसी को पाया, जो कुछ पीछे छोड़ा उस में नुक़्सान हुवा। (شَرحُ الصُّدُور ص۲۰۹،ابن عَساکِرج۲۷ص۳۹۵)

कहां हैं वोह ख़ूब सूरत चेहरे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ दौराने ख़ुत़्बा फ़रमाया करते : कहां हैं वोह ख़ूब सूरत चेहरे वाले ? कहां हैं अपनी जवानियों पर इतराने वाले ? किधर गए वोह बादशाह जिन्हों ने आ़लीशान शहर ता'मीर करवाए और उन्हें मज़्बूत़ क़ल्ओ़ से तक़्विय्यत बख़्शी ? किधर चले गए मैदाने जंग में ग़ालिब आने वाले ? बेशक ज़माने ने उन को ज़लील कर दिया और अब येह क़ब्र की तारीकियों में पड़े हैं। जल्दी करो ! नेकियों में सब्क़त करो ! और नजात त़लब करो। (شُعَبُ الْاِیمان لِلْبَیْہَقِی ج۷ ص۳۶۵ حدیث۱۰۵۹۰)

अभी से तय्यारी कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ हमें दुन्या की बे सबातियों, इस की बे वफ़ाइयों और **क़ब्र** की तारीकियों का एह़सास दिला कर ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार फ़रमा रहे हैं, क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी का ज़ेह्न दे रहे हैं। वाक़ेई **अ़क़्ल मन्द** वोही है जो मौत से क़ब्ल मौत की तय्यारी करते हुए नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर ले और सुन्नतों का म-दनी

चराग़ **क़ब्र** में साथ लेता जाए और यूं **क़ब्र** की रोशनी का इन्तिज़ाम कर ले, वरना **क़ब्र** हरगिज़ येह लिहाज़ न करेगी कि मेरे अन्दर कौन आया ! **अमीर** हो या फ़क़ीर, वज़ीर हो या उस का मुशीर, हाकिम हो या महकूम, अफ़्सर हो या चपरासी, सेठ हो या मुलाज़िम, डॉक्टर हो या मरीज़, ठेकेदार हो या मज़दूर अगर किसी के साथ भी तोशए आख़िरत में कमी रही, **नमाज़ें** क़स्दन क़ज़ा कीं, र-मज़ान शरीफ़ के रोज़े बिला उ़ज़्रे शर-ई न रखे, फ़र्ज़ होते हुए भी ज़कात न दी, हज फ़र्ज़ था मगर अदा न किया, बा वुजूदे क़ुदरत शर-ई पर्दा नाफ़िज़ न किया, मां बाप की ना फ़रमानी की, झूट, ग़ीबत, चुग़ली की आ़दत रही, फ़िल्में, डिरामे देखते रहे, गाने बाजे सुनते रहे, दाढ़ी मुंडवाते या एक मुठ्ठी से घटाते रहे। अल ग़रज़ ख़ूब गुनाहों का बाज़ार गर्म रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में सिवाए ह़सरत व नदामत के कुछ हाथ न आएगा। **जिस** ने फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल की भी पाबन्दी की, र-मज़ानुल मुबारक के इ़लावा नफ़्ली रोज़े भी रखे, गली गली कूचा कूचा **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाईं, क़ुरआने पाक की ता'लीम न सिर्फ़ ख़ुद ह़ासिल की बल्कि दूसरों को भी दी, "चौक दर्स" देने में हिच-किचाहट महसूस न की, "घर दर्स" जारी किया, सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में हर माह कम अज़ कम तीन दिन सफ़र करने के साथ साथ दीगर मुसल्मानों को भी इस की रग़बत दिलाई, रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई 10 दिनों के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से ईमान सलामत ले कर दुन्या से

रुख़्सत हुवा तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की क़ब्र में ह़श्र तक रह़मतों का दरिया मौजें मारता रहेगा और नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चश्मे लहराते रहेंगे ।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की** (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

सिंगर (गुलूकार) दा'वते इस्लामी में कैसे आया ?

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बस हर दम दा'वते इस्लामी के म–दनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार होगा । आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक ईमान अफ़्रोज़ **म–दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे मलीर (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 27 साल) का बयान कुछ यूं है कि मुझे बचपन में ना'तें पढ़ने का शौक़ था, घरेलू फ़ंक्शन्ज़ (तक़ारीब) में भी कभी कभार फ़रमाइशी गाना गा लेता । आवाज़ अच्छी होने के सबब ख़ूब दाद मिलती जिस से मैं "फूल" पड़ता । जब थोड़ा बड़ा हुवा तो गिटार (एक आलए मूसीक़ी) सीखने का शौक़ चराया, फिर मैं ने बा क़ाइदा गाना सीखने के लिये एकेडमी में दाख़िला ले लिया, कई साल तक सीखने के बा'द मैं ने गाने के मुक़ाबलों में ह़िस्सा लेना शुरूअ़ कर दिया, कई टी वी चेनल्ज़ पर भी गाया । वक़्त के साथ साथ शोहरत भी मिलती गई । फिर मुझे दुबई के बहुत बड़े शो (प्रोग्राम) में शिर्कत का मौक़अ़ मिला, वहां से हिन्द (भारत) चला गया जहां तक़रीबन छ माह तक गाने के मुख़्तलिफ़ मुक़ाबलों में ह़िस्सा लिया, बड़े बड़े फ़ंक्शन्ज़ और फ़िल्मों में गाना गाया और काफ़ी नाम व माल कमाया । फिर गुलूकारों की टीम के साथ दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में गया जिन में [केनेडा (टोरेन्टो,

वींक्वर), अमरीका के 10 स्टेट्स (शिकागो, लॉस एन्जेलस, सान फ़्रान्सिस्को वग़ैरा), इंग्लेन्ड (लन्दन)] में गया । जब कुछ अ़र्से के लिये वत़न आया तो अहले ख़ाना और मह़ल्ले दारों ने बड़ी पज़ीराई की, अगर्चे नफ़्स को इस से बड़ा मज़ा आया मगर दिल की दुन्या बे सुकून थी, कुछ कमी सी मह़सूस हो रही थी । दिल रूह़ानिय्यत का त़लबगार था, नमाज़ के लिये मस्जिद में आना जाना हुवा तो वहां पर इ़शा की नमाज़ के बा'द होने वाले दर्से **फ़ैज़ाने सुन्नत** में शिर्कत की सआ़दत मिली । दर्स अच्छा लगा लिहाज़ा मैं कभी कभार उस में बैठने लगा मगर दिलो दिमाग़ पर बार बार मुल्क से बाहर जाने ख़ूब गाने सुनाने, धन दौलत कमाने और शोहरत पाने का भूत सुवार था, दर्स के बा'द इस्लामी भाई मुझ पर जूं ही **इन्फ़िरादी कोशिश** शुरूअ़ करते मैं टाल मटोल कर के निकल जाता । एक रात सोया तो ख़्वाब में **दा'वते इस्लामी** के एक मुबल्लिग़ की ज़ियारत हुई जो बुलन्द जगह पर खड़े मुझे अपने पास बुला रहे थे गोया कि मुझे गुनाहों के दलदल से निकलने पर उभार रहे थे, जब सुब्ह़ उठा तो अपने मौजूदा अन्दाज़े ज़िन्दगी पर कुछ देर ग़ौरो फ़िक्र किया मगर गुनाहों भरी ह़ालत ही रही, कुछ अ़र्से बा'द मैं ने एक और ख़्वाब देखा जिस ने मुझे हिला कर रख दिया ! क्या देखता हूं कि मैं मर चुका हूं और मेरी लाश को ग़ुस्ल दिया जा रहा है । फिर मैं ने ख़ुद को बरज़ख़ में पाया, उस वक़्त मैं ने अपने आप को ऐसा बेबस मह़सूस किया कि कभी न किया था, अब मैं ने ख़ुद से कहा : "तुम बहुत मशहूर होना चाहते थे, देख ली अपनी औक़ात !" सुब्ह़ जब आंख खुली तो मैं पसीने में नहाया हुवा था और मेरा बदन थरथर कांप रहा था और यूं लग रहा था गोया एक मौक़अ़ और देते हुए मुझे दोबारा दुन्या में भेज दिया गया हो । अब मेरे सर से गाना गाने का भूत

मुकम्मल तौर पर उतर चुका था, मैं ने गुनाहों से सच्ची तौबा की और अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया कि आइन्दा किसी सूरत में भी गाना नहीं गाऊंगा। जब घर वालों को इस बात का पता चला तो उन्हों ने सख़्त मुज़ा-ह़मत की मगर **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ के करम से मेरा म-दनी ज़ेह्न बन चुका था लिहाज़ा मैं अपने फ़ैसले पर क़ाइम रहा। मुझे ख़्वाब में दोबारा उसी मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की ज़ियारत हुई, उन्हों ने मेरी हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई। **अल्लाह** तआ़ला के इस इर्शादे मुबारक : وَالَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۶۹﴾ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) नेकों के साथ है (پ۲۱،العنکبوت:۶۹)) के मिस्दाक़ मुझे **दा'वते इस्लामी** में इस्तिक़ामत मिलती चली गई। मैं ने नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी, अपने चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली और अपने सर को **सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे** से सर सब्ज़ कर लिया। पहले मैं गानों के अश्आ़र पढ़ा करता था अब मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ होने वाली कुतुब व रसाइल का मुता-लआ़ करना मेरा मा'मूल था। एक रात कोई किताब पढ़ते पढ़ते जब सोया तो मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और मुझे ख़्वाब में अपने आक़ा व मौला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हो गई जिस पर मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ का जितना भी शुक्र करूं कम है। इस से मेरे दिल को बड़ी ढारस मिली। फिर मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी म-दनी علیہ رحمۃ اللہ الغنی की क़ब्र मुबारक मुसल्सल बरसात की वजह से जब खुली तो उन के सह़ीह़ सलामत बदन, ताज़ा कफ़न, सब्ज़

सब्ज़ इमामे और ज़ुल्फ़ों के जल्वे देख कर मैं ख़ुशी से झूम उठा कि **दा'वते इस्लामी** के वाबस्तगान पर **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कैसा करम व एह़सान है। म-दनी काम करते करते कल का गुलूकार **जुनैद शैख़** म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से आज का मुबल्लिग़ व ना'त ख़्वां बन गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मुझे **दा'वते इस्लामी** की ज़ैली मुशा-वरत के ख़ादिम (निगरान) की ह़ैसिय्यत से मस्जिद और बाज़ार में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने, **सदाए मदीना** लगाने या'नी नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने, अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** करने की सआ़दत ह़ासिल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मरते दम तक म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए। اٰمين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمين صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

99 अस्माउल ह़ुस्ना की ख़्वाब में तरग़ीब

ऐ आ़शिक़ाने रसूल और मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या के मशहूर व मा'रूफ़ साबिक़ गुलूकार (SINGER) **जुनैद शैख़** ने येह "म-दनी बहार" लिखवा देने के कुछ दिन बा'द सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को बताया कि "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हाल ही में मुझे फिर एक बार सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा, जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के **अस्माउल ह़ुस्ना** याद करने का इशारा मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह मैं ने याद कर लिये हैं।" प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ यूं तो ह़दीसे पाक में **99 अस्माउल ह़ुस्ना** याद करने की फ़ज़ीलत मौजूद है मगर ख़ुश नसीबी की मे'राज कि आक़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर अपने दीवाने को ख़ुसूसिय्यत के साथ इस की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई। **99 अस्माउल ह़ुस्ना** की फ़ज़ीलत सुनिये और झूमिये चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के**

मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के निनानवे नाम हैं जिस ने इन्हें याद कर लिया वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा। (सह़ीह़ बुख़ारी जि. 2, स. 229, ह़दीस : 2736) (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये "**नुज़्हतुल क़ारी शर्हे सह़ीहुल बुख़ारी**" सफ़्ह़ा 895 ता 898 मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।"

(مِشْکَاۃُ الْمَصَابِیح ج۱ ص۵۵ حدیث ۱۷۵ دارالکتب العلمیة بیروت)

सुन्नतें आ़म करें, दीन का हम काम करें
नेक हो जाएं मुसल्मान, मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"म-दनी ह़ुलिया अपनाओ" के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से लिबास के 14 म-दनी फूल

पहले **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा हों ﴾1﴿ जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे तो **बिस्मिल्लाह** कह ले। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۱۰ ص۱۷۳ حدیث ۱۰۳۶۲) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल**

उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं ऐसे ही येह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात इस को देख न सकेंगे। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 268) ﴾**2**﴿ जो शख़्स कपड़ा पहने और येह पढ़े : اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ کَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِحَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे। (سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص٥٩ حدیث ٤٠٢٣) दुआ़ का तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे येह कपड़ा पहनाया और मेरी त़ाक़त व कुव्वत के बिग़ैर मुझे अ़त़ा किया ﴾**3**﴿ जो बा वुजूदे कुदरत अच्छे कपड़े पहनना तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) के त़ौर पर छोड़ दे, **अल्लाह** तआ़ला उस को करामत का हुल्ला पहनाएगा

(سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص٣٢٦ حدیث ٤٧٧٨)

तेरी सादगी पे लाखों तेरी आ़जिज़ी पे लाखों
हों सलामे आ़जिज़ाना म-दनी मदीने वाले

﴾4﴿ **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक लिबास अक्सर सफ़ेद कपड़े का होता

(کَشْفُ الاِلْتِباس فِی اسْتِحْبابِ اللِّباس لِلشَّیْخ عبدالْحَقّ الدّهلَوی ص٣٦)

﴾5﴿ लिबास ह़लाल कमाई से हो और जो लिबास ह़राम कमाई से ह़ासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज़ व नफ़्ल कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती। (ऐज़न 41) ﴾6﴿ मन्क़ूल है : जिस ने बैठ कर इ़मामा बांधा, या खड़े हो कर सरावील (या'नी पाजामा या शलवार) पहनी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसे मरज़ में मुब्तला फ़रमाएगा जिस की दवा नहीं (ऐज़न स. 39) ﴾7﴿ पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये म–सलन जब कुर्ता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल कीजिये फिर उलटा हाथ उलटी आस्तीन में (ऐज़न 43) ﴾8﴿ इसी त़रह़ पाजामा पहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाख़िल कीजिये और जब उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स या'नी उलटी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये ﴾9﴿ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक–त–बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़्ह़ा 52 पर है : सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिंडली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंगलियों के पौरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो (رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۵۷۹) ﴾10﴿ सुन्नत येह है कि मर्द का तहबन्द या पाजामा टख़्ने से ऊपर रहे (मिर्आत जि. 6, स. 94) ﴾11﴿ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना ही लिबास पहने। छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिह़ाज़ रखिये ﴾12﴿ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक–त–बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 481 पर है : मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक "औ़रत" है या'नी इस का छुपाना फ़र्ज़ है। नाफ़ इस में दाख़िल नहीं और घुटने दाख़िल

हैं । (دُرِّمُختــارو رَدُّالمُحتــار ج٢ص٩٣) इस ज़माने में बहुतेरे ऐसे हैं कि तहबन्द या पाजामा इस त़रह़ पहनते हैं कि पेड़ू (या'नी नाफ़ के नीचे) का कुछ ह़िस्सा खुला रहता है, अगर कुर्ते वग़ैरा से इस त़रह़ छुपा हो कि जिल्द (या'नी खाल) की रंगत न चमके तो ख़ैर, वरना **ह़राम** है और नमाज़ में चौथाई की मिक़्दार खुला रहा तो नमाज़ न होगी (बहारे शरीअ़त) ﴾13﴿ आज कल बा'ज़ लोग नीकर (हाफ़ पेन्ट) पहने फिरते हैं जिस से उन के घुटने और रानें नज़र आती हैं येह **ह़राम** है, ऐसों के खुले घुटनों और रानों की त़रफ़ नज़र करना भी **ह़राम** है। बिल ख़ुसूस दरिया के कनारे पर, खेलकूद के मैदान और वरज़िश करने के मक़ामात पर इस त़रह़ के मनाज़िर ज़ियादा होते हैं। लिहाज़ा ऐसे मक़ामात पर जाने में सख़्त एह़तियात ज़रूरी है (14) **तकब्बुर** के त़ौर पर जो लिबास हो वोह मम्नूअ़ है। **तकब्बुर** है या नहीं इस की शनाख़्त यूं करे कि इन कपड़ों के पहनने से पहले अपनी जो ह़ालत पाता था अगर पहनने के बा'द भी वोही ह़ालत है तो मा'लूम हुवा कि इन कपड़ों से **तकब्बुर** पैदा नहीं हुवा। अगर वोह ह़ालत अब बाक़ी नहीं रही तो **तकब्बुर** आ गया। लिहाज़ा ऐसे कपड़े से बचे कि **तकब्बुर** बहुत बुरी सिफ़त है। (بہارِشریعت حصّہ ١٦ ص ٥٢ مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ، رَدُّالمُحتار ج ٩ ص ٥٧٩ دارالمعرفة بيروت)

म-दनी ह़ुलिया

दाढ़ी, ज़ुल्फ़ें, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ (सब्ज़ रंग गहरा या'नी डार्क न हो) सफ़ेद कुर्ता कली वाला सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधी पिंडली तक लम्बा, आस्तीनें एक बालिश्त चौड़ी, सीने पर दिल की जानिब वाली जेब में नुमायां मिस्वाक, पाजामा या शलवार टख़्नों से

ऊपर। (सर पर सफ़ेद चादर और पर्दे में पर्दा करने के लिये **म-दनी इन्आमात** पर अ़मल करते हुए कथ्थई चादर भी साथ रहे तो मदीना मदीना) बयान कर्दा **म-दनी हुलिये** में जब किसी इस्लामी भाई को देखता हूं तो मेरा दिल बाग़ बाग़ बल्कि बाग़े मदीना हो जाता है!

दुआ़ए अ़त्तार ! या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे और **म-दनी हुलिये** में रहने वाले तमाम इस्लामी भाइयों को सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के साए में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

उन का दीवाना इमामा और ज़ुल्फ़ो रीश में
लग रहा है म-दनी हुलिये में वोह कितना शानदार

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ दो कुतुब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 (312 सफ़हात) नीज़ 120 सफ़हात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रहमतें क़ाफ़िले में चलो — सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी हल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो — पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! — صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد









اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के जिम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, श्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net